सृजन-समीक्षा

अंतरा शब्दशक्ति का प्रकल्प

केन्द्रीय रचनाकार

• डॉ सरिता नारायण

सृजक-सृजन-समीक्षा

डॉ सरिता नारायण

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
इंदौर,मध्यप्रदेश

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर,

इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण: मृदुल जोशी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं |

अन्तरा-शब्दशक्ति के सप्ताह का कवि विशेषांक में प्रस्तुत "सृजक"

डॉ सरिता नारायण का परिचय

नाम- सरिता नारायण

पिता - डा बिनोद नारायण

माता - शशि प्रभा नारायण

पति - डा मधु रंजन

पता -वाघेली, पुणे, महाराष्ट्र ४१२२०७

आत्मकथ्य

इक ज्वाला जो फूटता है ,अन्दर ही अन्दर कुछ ना कुछ तहस नहस करने की शक्ति रखता है, कुछ शायद कर भी देता है, पर धरती की भी एक सीमा होती है सहने और बर्दाश्त करने की, और धरती रास्ता देती है, उस लावा को बाहर निकलने का, ख़ुद फट कर,लावा फूटफूट कर बाहर निकलने लगता है, थोड़ी राहत होती है, कभी-कभी बहुत विस्फोटक भी हो जाती है वो लावा, पर कभी शान्त धीरे धीरे रीसती रहती है,बहती रहती है, निरन्तर ।

ठीक उसी तरह का होता है एक कवि का मन, भावो का ज्वार भाटा, उमड़ते-घुमडते भाव, बाहर निकलने को छटपटाते रहते है,
शब्दों का सहारा लेना पड़ता है, पर पूरे मन को सच्चाई के साथ शब्दो का जामा पहनाना आसान भी नहीं होता, कुछ ना कुछ बेचैनी रह ही जाती है, कुछ ना कुछ अन्दर रह ही जाता है जो उसे कुछ और लिखने को सदा प्रेरित करता रहता है, और इस तरह जन्म लेता है एक **कवि** ।

अगर अपने बारे में कहूँ तो मै पेशे से चिकित्सक हूँ, कुछ पेशे की माँग और कुछ घुमक्कड़ प्रवृति ने देश के विभिन्न हिस्से और विदेश में काम करने का

मौक़ा दिया । मानवीय वेदना और संवेदनाओं को सभी वर्गों और परिस्थितियों में एक सा पाया। लोगों की पीड़ा को बहुत ही नज़दीक से महसूस किया, पेशा ही कुछ ऐसा रहा । अवचेतन मन में, अन्दर ही अन्दर एक घुटन पलती रही जो हर हाल में बाहर निकलने को छटपटाती रही, और तब क़लम का सहारा लिया। अभिव्यक्त होने, या यूँ कहूँ, अपने अंतस को शान्त करने, जो अन्दर अटका पड़ा था, उसे परोस दिया पर ये सब क्या इतना आसान था ? **मुक्त** होना चाहती थी क्या मुक्ति मिल पायी?

अपनी रचनाओं को एक पुस्तक का रूप दिया *अनूगूंज*, जिसे लोगों ने भरपूर सराहा, सदा से ही बेहद ही सरल भाषा का उपयोग किया, सरल भाषा में लिखा काव्य सीधे दिल तक उतर जाता है, ऐसा मेरा मानना है ।
समय समय पर कवि सम्मेलनों में भाग लिया, लोगों का भरपूर प्यार मिला, **शब्ध सुगंध** द्वारा साहित्यिक सेवाओं के लिये सम्मान से अलंकृत मैं, आप सब के बीच अपनी सेवाओं को ले कर उपस्थित हूँ । हिन्दी रचनाकारों को प्रेरित करने का आपलोगो का प्रयास सराहनीय है, मेरी शुभकामनायें सदा आप सब के साथ बनी रहेगी ।।

ख़ुशी उड़ती है, ग़म ठहरा हुआ सा,
फुलझड़ी है ख़ुशी, ग़म सुलगती बाती,
ख़ुशी दिखावा, एक छलावा,
ग़म सच्ची, गहरी ।
ढका हुआ सा ।
ख़ुशियों के चादर में लिपटा हुआ सा ।

डा सरिता नारायण

"सृजक का सृजन"

मन

मन, तू क्यूँ मनमानी करता है?
न मेरी सुनता है न किसी और की
न किसी तर्क वितर्क को मानता है
न नफ़ा देखता है, न नुक़सान देखता है
मन तुम्हें दबाती हूँ, तो सिसकता है, गिड़गिड़ाता है,
न रस्मों रिवाज से मतलब,
न दुनियादारी की चिन्ता,
ये मन ही तो है जो सारे उल्टे सीधे काम करवाता है ।।
इस मन मैं क्या करूँ, जो अपना नहीं उसे अपना मान बैठता है ।
इसे कितना भी दबाती हूँ,
बस मनमानी करता है,
ये मेरा बावरा मन अपनी बातें मनवा ही लेता है ।
तिनका तिनका उखड़ रहा है,
पुर्ज़ा पुर्ज़ा बिखर रहा है,
मन है की तरह तरह के सपने बुन रहा है ।।
न जाने किस किस को याद कर
बस यूँ ही तड़पता है, ये मेरा बावरा मन ।
बहुत मनमानी करता है,
ये मेरा बावरा मन ।।

मोतियों की लड़ी

मोतियों की लड़ी तेरी यादें
मुझे बार बार सहला जाता है
उस धागे में पिरोया
एक एक मोती
खट्टी मीठी याद को जगा देती है ।।।
लोग कहते है ,अन्त हो गया
पर मुझे उस माले में अन्त नहीं दिखता
मेरे बदन को छू जाता है ।
और उन यादों में समायी मैं ,
उस सच्चे चमकीले मोती की तरह,
जो अभी अभी निकला है सीप से.
मेरे बदन को छूती यादों की लड़ी
वो नोक झोंक , वो रूठना मनना,
आचार विचार सभी को पिरो लेती हूँ ।।
वो मोतियों की लड़ी अन्तहीन है , अन्तहीन है ।।
तेरी यादों की तरह, तेरी यादों की तरह ।।

सभ्यता

सभ्यता ने न जाने कितने लिबास गढ़े

कितनी कशीदाकारी की ,

पर कपड़े की न तो असली रंगत गयी ,

न पहचान गयी ,

कशीदो के बीच से झाँकता कपड़ा

अपनी इक पहचान लिए ,

पुकारता रहा....पुकारता रहा ।

वो आदि मानव बनने को तैयार सदा था ,

पर ये रंग रोगन ये भड़कता संसार ,

रोकता रहा बेड़ियाँ डालता रहा ।।।।।

छूटा पल

वो दूर जो छूट गया होता है

वही क्यूँ ,बार बार पास आता है ,

कभी हँसाता ,कभी रूलाता ,

कभी यूँ ही उलझाता है ।।।।।

अभी आज का ये पल ,

कल को ,कल हो जायेगा ,

फिर यादों के झरोखों ,

से ,क्या ये भी ,इसी तरह पिघलायेगा ।।

इस ,बीत रहे पल की सवारी ,

मे मैं आगे आगे बढ़ते जाऊँगा ,

आज का यह पल ,
कल को कल हो जायेगा !!

छूटते पल

कुछ तो था,
जो छूट गया था,
टूटने की कगार पर,
ख़ामोशी के द्‍वार पर,
अपनी अन्तिम साँसों में उलझा हुआ ।।
सारे उम्मीदों को तोड़ता हुआ,
न चाह, न इन्तज़ार,
सारे मियाद पूरे हुये,
फिर हवा का ये कैसा झोंका,
जानी पहचानी खूशबू,
जाना पहचाना अन्दाज़,
ज्जबातो का ये कैसा तूफ़ान,
ख़ामोश फ़िज़ा को चीरता हुआ ।
आँखो में कुछ चुभता हुआ,
दिल में कुछ उतरता हुआ.....
पनपता हुआ ।

मेरी मुट्ठी

मेरी मुट्ठी में बन्द पड़ा,
हीरे का टुकड़ा,
फिसल कर न जाने कब गिर गया,
एहसास था मुझे ,ख़ाली है ख़ाली है,
मेरी मुट्ठी ।।
एक सुखद भ्रम कि हीरे का टुकड़ा,
वही है वही ।।
अपनी ख़ाली हथेली देखने की हिम्मत न थी,
और मेरी मुट्ठी आज भी बन्द है ।
मेरी मुट्ठी आज भी बन्द है ।

अंगार

हमने जलाये थे , कई दिये
तुम न आये ,
सभी अंगार हो लिये ।
अपनी परिधि ,अपनी धुरी पर
घूमते हम ,
निकल न पाये ,,,,अपने दायरे से ,
यूँ समझो की ख़ाक हो लिये ।।।।।।

"सृजन की समीक्षा"

कीर्ति प्रदीप वर्मा

केंद्रीय रचनाकार के रूप में आदरणीय डॉक्टर सरिता नारायणन कोअनंत शुभकामनाएं। पेशे से चिकित्सक, मानव शरीर जिनके लिए मात्र एक मशीन हो, उसके भावों को पढ़ना और जज्बातों को समझना दोनों परस्पर विरोधी बातें। पर आपने दोनों में सामंजस्य स्थापित किया जो बहुत कम देखने को मिलता है। गैर हिंदी भाषी होते हुये हिंदी पर इतना अच्छा अधिकार, बहुत-बहुत **बधाई**

आपकी सभी रचनाएं भाव प्रधान हैं ।

-मन- सच है ,मन की कोई थाह नहीं होती,बावरे मन का सटीक चित्रण ।

-मोतियों की लड़ी- मोतियों की लड़ी में सुंदर यादों का वर्णन,बहुत खूब।

-सभ्यता- सभ्यता और कपड़े का तुलनात्मक अध्ययन ,वाह।

-पल- सच ही कहा है समय की चाल नहीं रुकती जो आज है वह कल में परिवर्तित हो जायेगा।

-मेरी मुट्ठी में बंद हीरा- हर व्यक्ति इसी आभास में जीता है।

-अंगार- जलाए कई दिए.... खाक हो लिए

सुंदर भावाभिव्यक्ति। एक से बढ़कर एक सुंदर रचनाओं लिए बहुत-बहुत **बधाई** एवं शुभकामनाएं सरिता जी।

कीर्ति प्रदीप वर्मा, बाबई (मध्य प्रदेश)

विवेक दुबे"निश्चल"

सप्ताह का कवि विशेषांक के लिए डॉ. सरिता नारायण जी को सर्व प्रथम हार्दिक **बधाई** ।

चिकित्सक परिवार में जन्म लेकर, चिकित्सक जीवन जीते हुए सहित्य साधना प्रशंसनीय है। जो रह जाता है वो कलम उतर जाता है, आप कवि की सटीक

परिभाषा देते हुए ।
चिकित्सा सेवा में रहते हुए, मानवीय सम्वेदनाओं को अत्यधिक पास से समझते हुए, अन्तर्मन में शायद एक गूँज उठी होगी, तब ***अनुगूंज*** रची होगी।
इतने व्यस्त जीवन में सहित्य साधना सरहानीय है ।
आपकी प्रथम रचना ***मन***
सुँदर अभिव्यकि मन की मन से
मन की निरंकुशता को प्रदर्शित करती हुई । कवि अपने मन के भावों को सहज सरल शब्दों के माध्यम से अपनी रचना में प्रदर्शित करते हुए ।
द्वितीय रचना ***मोतियों की लड़ी***
किसी की यादों को माला के रूप में प्रस्तुत किया सुँदर उपमा मोतियों के साथ । धागे और मानकों का सुंदर संयोजन, साधुवाद आपको।
तृतीय रचना ***सभ्यता***
सटीक प्रहार प्रगतिशील सभ्यता पर
चतुर्थ एवं पंचम रचना ***छुटा पल*** ***छूटते पल***
समय की सार्थक व्यख्या रोके से न रुके जो ।
जो गुजर गए बस इंतज़ार बन गए । हृदय को छूती अभिव्यक्ति
षष्टम रचना ***मेरी मुट्ठी***
यथार्थ को उकेरने का प्रयास , भ्रम को जकड़े रहने की लालसा । वाहःहः!
सप्तम रचना ***अंगार***
अन्तर्मन के शब्द विरह की पी को अंगार और दिये से प्रस्तुत करते आप।
अंत में इतना ही की आदरणीया की रचनाएं सहज भाव सरल शब्दों से लिखी गई हैं। मुक्त विधा का सृजन आज के पाठक को भाता हुआ । आपके उज्वल भविष्य की कामना ।मेरे इन शब्दों के साथ ....
अम्बर को थकते किसने देखा है,
दूर क्षितिज पर नीली रेखा है।
ढ़लतीं साँझ कुछ पल को,
दूर कहीं फिर एक सबेरा है ।

विवेक दुबे"निश्चल", रायसेन (मध्य प्रदेश)

डॉ. राजलक्ष्मी शिवहरे

डॉ.सरिता नारायण जी चिकित्सक होते हुए भी एक कवयित्री बन गईं ।इसमें आश्चर्य कुछ नहीं मन तो
नारी का संवेदनशील होता है।
वे क्यों लिखती हैं? वे कहती हैं जब मन कुछ परेशान हो जाता है तब लेखनी का आश्रय लेती हैं ।
एक रचनाकार को लगता है--खुशी कपूर की तरह उड़ जाती है पर दुख ठहरा हुआ लगता है।
उनकी प्रथम रचना--"मन" बंजारों की तरह यहाँ वहाँ निरन्तर भागता हुआ।मन की पराकाष्ठा जो अपना नहीं उसे ही पाना चाहता है।
मोतियों की लड़ी जीवन के हर दिन में पिरोई यादें । ना तो धागा समाप्त होता है ना मोती ।
"सभ्यता"-बाहरी आवरण में फँसा मानव सांस लेने को मजबूर। कैसी सभ्यता ना जीने देती ना मरने।
"पल" बीतते क्षण भागता समय। फिर भी कुछ ना कुछ खट्टी मीठी यादें देकर बीत ही जाता है।
सरिता जी अभिनन्दन सहज अभिव्यक्ति के लिए।
"छूटते पल" हम जिन्हें रोक लेना चाहते है।
कुछ देर हम जीना चाहते हैं पर असहाय से छूटते पलों को देखते रह जाते हैं ।
"मेरी मुट्ठी" बहुत बढ़िया रचना। अद्भुत ।
खो चुका है हीरा। पर मन स्वीकार करना नहीं चाहता। इसलिए बन्द मुट्ठी खोलकर देखना नहीं चाहतीं।
"अंगार" अन्तिम रचना। छोटी सी कहने को पर गहन अनुभूति है। दीप जलाए प्रिय की प्रतिक्षा में जो नहीं आए और वही दीप अंगार लग रहे हैं ।
सरिता जी साधुवाद। आपकी लेखनी शुद्धजल की तरह प्रवाहित होती रहें और समाज को निर्मल करती रहें ।

डॉ.राजलक्ष्मी शिवहरे, जबलपुर (मध्य प्रदेश)

प्रदीप सोनी 'शून्य'

"बहुत मनमानी करता है
ये मेरा बावरा मन.."

डाॅ. सरिता नारायण जी की कविता की यह पंक्ति उनकी रचनाओं का आशय प्रकट कर देती है। अपने आसपास घटित हो रही घटनाओं पर मन में जो आया उन्हे शब्द बद्ध करने का प्रयास झलकता है। यह कविता स्वयं से ही द्वंद्व को उकेरती है, इस द्वंद्व से हम आप सभी जूझते रहते हैं। रचनाकार की भावुकता भी उनकी कविताओं में परिलक्षित होती है - अपनी यादों के मोतियों की माला में नोंक झोंक, मान-मनुहार, आचार-विचार के चमकीले मोती पिरोना और कहना - "मोतियों की लड़ी अंतहीन है.... तेरी यादों की तरह।" कविताओं में प्रयुक्त बिम्ब भी आकर्षित करते हैं। "सभ्यता का लिबास और आधुनिकता की कसीदाकारी का अच्छा चित्रण। छूट गये और छूट रहे पल जैसे" बंद मुठ्ठी से फिसलती रेत " और सच्चाई को नकारा या सच्चाई से भागता मूक दर्शक मानव।

कविताओं में व्याकरण गत कतिपय टंकण त्रुटियां या अशुद्धियाँ कवित्त प्रवाह व प्रभाव के प्रतिकूल होता है। रचनाकार से इस ओर भी प्रयास अपेक्षित है।

बहुत बहुत **बधाई** व शुभकामनाएँ।

प्रदीप सोनी 'शून्य'

नमिता दुबे, हैदराबाद

आदरणीय सरिता नारायण जी का हार्दिक **अभिनंदन** ।

उनकी कविता 'मन' मन के तारों को झंकृत करने में पूर्णत: सक्षम है ।

'मोतियों की लडी़' में आपनें ,जिन्दगीं की अनुभूति को सरल शब्दों में परिभाषित किया है |

'सभ्यता' में हमारे समाज के बाहरी और भीतरी सच्चाई को दर्शाया गया है ।

'छूटा पल' और 'छूटते पल' में हाथ से फिसलते लम्हों का दर्द
स्पष्ट दिखता है ।

'मेरी मुट्ठी' में हाथ से छूटते पलों का एहसास शिद्दत से उकेरा गया है ।
'अंगार' में जीवन की विवशता का दर्द महसूस कराया गया है
सरिता नारायण जी की सभी रचनायें जिन्दगीं के बेहद करीब हैं। हर किसी की जिन्दहीं से रिलेट होती सरल भाषा और चुभन है ।
नमिता दुबे, हैदराबाद

कैलाश बिहारी सिंघल

श्रद्धेय डॉ. सरिता नारायण जी का एक चिकित्सक होकर हिन्दी साहित्य से इतना लगाव प्रणम्य है...सरल सहज शब्दों में मन की बात कह देना आपको श्रेष्ठ सृजक की उपाधियों से विभूषित करता है...आपकी रचनाओं को पढ़कर सुखद अनुभति हुई...जिसे तांका विधा में ढालने का प्रयास किया है...

सप्ताह कवि
सरिता नारायण
आत्मकथ्य में
कवि मन की व्यथा
का श्रेष्ठ शब्दांकन(1)

शब्द सुगंध
अनुगूंज से मिली
सृजन किया
कोमल हृदय में
पीड़ा की अनुभूति(2)

रचनाओं में
अनुभव निचोड़ा
आत्म मुग्धता
परिलक्षित होती
सरल सृजन में(3)

बावरा मन
मोतियों की है लड़ी
सभ्यता पढ़ी
कशीदाकारी गढ़ी
छुटते गए पल(4)

मेरी मुट्ठी में
हीरे का टुकड़ा भी
अंगार बन
अपनी धुरी पर
अपने दायरे में(5)

कवि का मन
शुभकामनाएं देता
श्रेष्ठ सृजन
हिन्दी की महिमा में
चिकित्सक नयन(6)

अन्तरा शब्दशक्ति के संचालक समूह को सादर नमन... जिनके सद्प्रयासों से डॉ सरिता नारायण जी जैसी काव्य विभूतियों को नजदीक से जानने और पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ... उज्ज्वल भविष्य की शुभमंगल कामनाओं के साथ पुनः बहुत बहुत बधाइयाँ....।

कैलाश बिहारी सिंघल
धामनोद, जिला धार (मप्र)

अन्तरा-शब्दशक्ति के व्हाट्सअप एवं फेसबुक समूह में १३ नवम्बर २०१६ दिन रविवार से हर रविवार को 'सप्ताह का कवि विशेषांक' आरम्भ किया गया जिसमें 'सृजक' का परिचय, 'सृजक का सृजन' और पाठकों की भूमिका में समूह के अन्य सभी सदस्यों द्वारा की गई 'सृजन की समीक्षा' को अन्तरा-शब्दशक्ति के फेसबुक पेज और समूह पर सहेजा गया है। अब तक वरिष्ठ और नवोदित रचनाकारों सहित लगभग ६५ रचनाकारों को प्रस्तुत किया जा चुका है और आगे भी गतिविधि सतत क्रियान्वित है।

'सृजन-समीक्षा' एक प्रयास है 'सृजक के सृजन को समीक्षा सहित' पाठकों तक वेबसाइट पर ईबुक और मुद्रित पुस्तकों के माध्यम में महत्वपूर्ण दस्तावेज की तरह सहेजने का। आशा है यह महत्वपूर्ण दस्तावेज सृजक और साहित्य जगत दोनों के लिए अनमोल धरोहर बनेगा। अनंत शुभकामनाओं सहित।

डॉ. प्रीति सुराना

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

सहयोगी संस्थान

हिन्दीग्राम — www.hindigram.com

मातृभाषा उन्नयन संस्थान — www.matrubhashaa.org

मातृभाषा — www.matrubhashaa.com

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन

१५ नेहरू चौक, मेन रोड बारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१

संपर्क: ९४२४७६५२५९ । अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com